UGC CARE List (Arts and Humanities) Sr. No.-326
RNI : UTTMUL00029
ISSN : 2347-9892

शोधप्रज्ञा

अर्द्धवार्षिकी मूल्याङ्किता शोधपत्रिका
Biannaul Refereed Research Journal
UGC Approved

वर्षम्-अष्टमम् अङ्को-प्रथमः दिसम्बरमासः, २०२०

प्रधानसम्पादकः
प्रो० देवीप्रसादत्रिपाठी
कुलपतिः

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः
हरिद्वारम्, उत्तराखण्डम्

UGC CARE List (Arts and Humanities) Sr. No.-326 ISSN : 2347-9892

शोधप्रज्ञा

(अर्द्धवार्षिकी मूल्याङ्किता शोधपत्रिका)

प्रधानसम्पादकः
प्रो. देवीप्रसादत्रिपाठी
कुलपतिः

परामर्शदातृसमितिः
आचार्यः बालकृष्णः
प्रो. रमेशकुमारपाण्डेयः
प्रो. रूपकिशोरशास्त्री
प्रो. ओमप्रकाशसिंहनेगी
प्रो. दिनेशचन्द्रचमोला

सम्पादकमण्डलम्
प्रो. मोहनचन्द्रबलोदी
डॉ. प्रतिभा शुक्ला
डॉ. शैलेशकुमारतिवारी
डॉ. लक्ष्मीनारायणजोशी
डॉ. मनोजकिशोरपंतः
डॉ. रामरतनखण्डेलवालः
डॉ. उमेशकुमारशुक्लः

प्रबन्धसम्पादकः
श्रीगिरीशकुमारोऽवस्थी

शोधलेखमूल्यांकनसमितिः
प्रो. गणेशभारद्वाजः
प्रो. शिवशंकरमिश्रः
डॉ. कामाख्याकुमारः
डॉ. प्रकाशचन्द्रपंतः
डॉ. रामरतनखण्डेलवालः

वित्तव्यवस्थापिका
श्रीमती हिमानी स्नेही

शोधाधिकारी
डॉ. महेशचन्द्रध्यानी

टङ्कणकर्त्ता
श्रीत्रिभुवनसिंहः

क्रम सं.	विषय	नाम	पृष्ठ सं.
22.	आजादी से पूर्व भारतीय संस्कृति के संरक्षण में हरिद्वार की हिन्दी पत्रकारिता का योगदान	डॉ. प्रविंद्र कुमार	150
23.	नीला चाँद के राजनीतिक परिदृश्य की ऐतिहासिकता	डॉ. उमेश कुमार शुक्ल	155
24.	संस्कृत आयोगों की अनुशंसाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मोनिका पारीक	162
25.	वाल्मीकि और तुलसी की मन्दोदरी : एक आदर्श भारतीय नारी	डॉ. मृदुल जोशी	168
26.	शिशुपालवधमहाकाव्य में ज्योतिषशास्त्रीय अवधारणा	डॉ. नीरज कुमार जोशी	172
27.	वर्तमान समय में योग द्वारा आदर्श जीवनशैली	पूजा डॉ. मंजू बोरा	182
28.	शब्दतत्त्वविमर्श	डॉ. सुधीर कुमार शर्मा	187
29.	सौन्दर्यतत्त्व मीमांसा	डॉ. स्नेहलता शर्मा	193
30.	ईशावास्योपनिषद् का शैक्षिक अवदान	डॉ. विन्दुमती देवी डॉ. अरविन्द नारायण मिश्र	201
31.	वैदिक परिप्रेक्ष्य में विश्व शान्ति	डॉ. नवीन चन्द्र पन्त	206
32.	स्वामी श्रद्धानन्द, गुरुकुल और संस्कृत शिक्षा	डॉ. योगेश कुमार	211
33.	संस्कृत-काव्यशास्त्र का विकास क्रम	डॉ. मनोज किशोर पन्त	217
34.	नाद योग एवं संगीत साधना का मनुष्य के स्वास्थ्य पर पड़ने वाला प्रभाव	डॉ. कामाख्या कुमार शिवचरण नौडियाल डॉ. रोहित चौबे	221
35.	एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् : समग्र विषेलेषण	डॉ. रवि प्रभात	229
36.	Yoga for cancer: A review of the evidence based researches	Dr. Kamakhya Kumar Anjana Uniyal	234
37.	Impact of Online Education on Traditional Students Education during COVID-19	Sushil Kumar Chamoli	249
38.	Ontological Status of Iśvara (GOD): From Classical to Neo-Mimâêsâ	Prof. Ramesh Chandra Bharadwaj	255
39.	Yogic Intervention on Anxiety through Kapalbhati and Anulom-Vilom Pranayama	Dr. Bhanu Prakash Joshi	261

शिशुपालवधमहाकाव्य में ज्योतिषशास्त्रीय अवधारणा

डॉ० वीरज कुमार जोशी
अकादमिक एसोसिएट
संस्कृत विभाग,
उत्तराखण्डमुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र महाकवि माघ के शिशुपालवध को पढ़कर हमें उनके दोहरे व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक दिखाई देती है, जिसमें एक ओर उत्कृष्ट कवित्व है, तो दूसरी ओर उद्दाम पाण्डित्य। जहाँ तक कवित्व का प्रश्न है, माघ का कवित्व काव्यशास्त्र के नियमानुगत विकसित हुआ है। अतः माघ का काव्य "शब्दार्थौ काव्यम्" इस काव्यलक्षण की कसौटी कहा जा सकता है। माघ-काव्य प्रतिभा के अखण्ड भण्डार के अधिष्ठाता है। काव्य के कलावादी दृष्टिकोण के पीछे उनके दो लक्ष्य रहे हैं, एक तो यह की वे परम्परा से हटकर काव्य की सर्जना नहीं करना चाहते तथा दूसरा यह की वे अपने पूर्व के सभी कवियों को कलावादिता में अपने से पीछे छोड़ देना चाहते है। यही कारण है कि माघ का व्यक्तित्व संस्कृत-साहित्य सृजन के क्षेत्र में पर्याप्त स्पर्धात्मक रहा है।

शिशुपालवधमहाकाव्य संस्कृत साहित्यकी एक अमूल्य निधि है। "**नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते**" के आचार्य माघ की यह पाण्डित्यपूर्ण रचना संस्कृत विद्वानों के द्वारा अत्यन्त ही समादृत हुई है। इस महाकाव्य में अनेक वर्णनों में महाकवि द्वारा अनेक शास्त्रीय विषयों पर चर्चा की है उसमें भी ज्योतिषशास्त्र का विवेचन करने में उनकी विशिष्ट रुचि दिखाई देती है। महाकवि द्वारा विभिन्न स्थानों में दिव्य चरित्र सम्बद्ध कथा प्रसङ्गों का वर्णन भिन्न-भिन्न रूपों में मिलता है, उन कथांशों के अन्तर्गत ही विभिन्न स्थानों में ज्योतिषशास्त्रीय संबद्ध ग्रह नक्षत्रों द्वारा बनने वाले विशिष्ट योगों की स्थिति, ऋतु मुहूर्तादि द्वारा बनने वाले विशिष्ट स्थिति तथा मनुष्य के विभिन्न शरीरावयवों की आकृति का ज्ञान सामुद्रिकशास्त्रानुगत करते हुए उनके शुभाशुभ विचारों का वर्णन तथा शकुन सूचक शुभाशुभ फल को ज्योतिषी सन्दर्भों में प्रस्तुत किया है। यह ज्योतिषशास्त्र वेद के नेत्र है, अतः अन्य अङ्गों में इसकी प्रधानता तर्क सङ्गत है।

वेदस्य चक्षुः किलशास्त्रमेतत्प्रधानताङ्गेष्वतोऽस्य युक्ता।
अङ्गैर्यतोऽन्यैरपि पूर्णमूर्तिश्चक्षुर्विना कः पुरुषत्वमेति ॥[1]

[1] प्रश्नमार्ग १/१२

इस ज्योतिषशास्त्र का कर्म से गहरा सम्बन्ध है। ज्योतिषशास्त्र में फल प्राप्ति का समय कर्मफल या कर्म भेद के आधार पर किया जाता है। यहाँ कर्म की संज्ञा तीन प्रकार से की गयी है, संचित, प्रारब्ध, क्रियमाण इन्हीं विविध कर्मों का विचार करके तीन भिन्न भिन्न पद्धतियाँ प्राप्त होती हैं। फलितशास्त्र में संचित कर्मों का फल विचार जन्मकुण्डली के अन्तर्गत विविध विविध योगों के माध्यम से, क्रियमाण कर्मों का फलविचार गोचरवश प्रश्नकुण्डली के माध्यम से, जिस कर्मफल की प्राप्ति प्रारब्ध कर्म के अनुसार दशाओं के माध्यम से प्राप्त होती है, उसे प्रारब्ध कर्म कहते है। ज्योतिषशास्त्र में प्रारब्ध कर्म का परिचय भारतीय ज्योतिष के प्रवर्तक महर्षियों ने प्रतिपादित किया है कि कर्म करके मनुष्य अपने अनिवार्य फल को अवश्य ही प्राप्त करता है। कहा भी है-

स्वर्गाद्यनुभवक्षीण शिष्य प्राचीन कर्मणाम्।
भोगाय जननं नृणां मोह भाजां महुर्मुहु॥
स्वकर्म भोक्तुं जायन्ते प्रायेणैव हि जन्तवः।
क्षीणे कर्मणि चान्यत्र पुनर्गच्छति देहिनः॥[1]

यद्यपि मनुष्य का कर्म करना अथवा न करना यह उसकी स्वयं की इच्छा पर निर्भर हो सकता है परन्तु यदि कहीं भी उसमें एक भी कर्म निषादित होता है तो उसे इस कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा।

अर्थात् अन्य जन्मों में मनुष्य ने जो शुभाशुभ कर्म किये हैं, उन अर्जित कर्मों की फलप्राप्ति को ज्योतिषशास्त्र स्पष्ट रूप में अभिव्यंजित करता है। इस प्रकार ज्योतिषशास्त्रीय ग्रन्थ के द्वारा जातक के जीवनकाल में प्राप्त होने वाले शुभाशुभ सुख एवं दुख का कारण पूर्वजन्म में किये गये कर्मों के अनुसार विवेचन किया जाता है। इसी ज्योतिषशास्त्रीय सिद्धान्त को लेकर महाकवि माघने शिशुपालवधमहाकाव्य में शिशुपालके पूर्वजन्म का वृतान्त ग्रन्थ के आरम्भ में प्रतिपादित किया है।

बलावलेपादधुनापि पूर्ववत् प्रबाध्यते तेन जगज्जिगीषुणा।
सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि॥[2]

यह सर्वविदित है कि प्राचीन काल में सभी लोग अपनी दिनचर्या में यात्रादि प्रसंगों में तथा कार्य विशेष के लिये नक्षत्रादि का ज्ञान रखते थे। जब साधारण व्यक्ति अपने जीवन में इनको महत्व

[1] प्रश्नमार्ग १/३३-३५
[2] शिशुपालवध १/७२

दृष्टा जो विशिष्टजनों का इस विषय की ओर लगाव होना स्वाभाविक है। महाकाव्य में नायक व प्रतिनायक के आक्रमण को सूर्य व चन्द्र ग्रहण के समान वर्णन किया है, क्योंकि पूर्णिमा को चन्द्रमा षोडश कला सम्पन्न (पूर्णवत्ती) होता है, तभी राहु उस पर आक्रमण करता है जब कि अमा पूर्व में वाली सूर्य पर राहु का आक्रमण होता है।-

ध्रियते यावदेकोऽपि रिपुस्तावत्कुतः सुखम्।

पुरः क्लिश्नाति सोमं हि सैंहिकेयोऽसुरद्रुहाम्॥[4]

जैसे कि ज्योतिष ग्रन्थों में ग्रहण होने पर राजा के लिये अनिष्ट, अतिवृष्टि, अनावृष्टि या महामारी द्वारा प्रजा का विनाश व धन क्षय आदि का होना स्वाभाविक है। इस ग्रह आच्छादन को श्रीमद्गणेशदैवज्ञ विरचित ग्रहलाघवम् में इस प्रकार कहा है।-

छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभा छादकच्छाद्यमानैक्यखण्डं कुरु।

तच्छरोनं भवेच्छन्नमेतद्यदा ग्राह्यहीनावशिष्टं तु खच्छन्नकम् ॥[5]

इसी प्रकार ग्रहों की मैत्री को भी कवि ने प्रसंगानुसार महाकाव्य में उचित स्थान दिया है। क्योंकि व्यवहार में देखा जाता है कि परिस्थिति के अनुसार कभी शत्रु मित्र हो जाता है। मित्र शत्रु हो जाता है महाकाव्य में शिशुपाल को भगवान श्रीकृष्ण के साथ शत्रुता का विवेचन करते हुए महाकवि माघने ज्योतिषशास्त्रप्रसिद्ध ग्रहों की कृत्रिमशत्रुता को निम्नलिखित श्लोक के माध्यम से प्रस्तुत किया है।-

सखा गरीयान् शत्रुश्च कृत्रिमस्तौ हि कार्यतः।

स्याताममित्रौ मित्रे च सहजप्राकृतावपि॥[6]

ज्योतिषशास्त्र में सभी ग्रहों के स्वाभाविक (नैसर्गिक) मैत्री, स्वाभाविक शत्रुता, स्वाभाविक तटस्थता, स्वाभाविक समानता और जन्म-कुण्डली में ग्रहों का परस्पर सम्बन्ध होना विशेष महत्त्व रखता है। इस प्रकार ग्रहों की स्वाभाविक मित्रता-शत्रुता को सारावली में निम्नलिखित रूप में वर्णित किया गया है।-

मित्राणि सूर्याद्गुरुभौमचन्द्राः सूर्येन्दुपुत्रौ रविचन्द्रजीवाः।

भानुः सशुक्रः शशिसूर्यभौमा मन्देन्दुजौ शुक्रबुधौ क्रमेण॥

शुक्रार्कजौ चन्द्रमसो न कश्चित्सौम्यः शशी शुक्रबुधौ रवीन्दू

सोमार्कवक्रा रवितस्त्वपित्र मित्रारिशेषो न सुहृन्न शत्रुः॥[7]

[4] शिशुपालवध २/३५

[5] ग्रहलाघवम् ५/५

[6] शिशुपालवध २/३६

मानसागरी में निम्नलिखित रूप में वर्णन किया गया है।-

शत्रुमन्दसितौसमश्च............ मित्रं स्थितः॥[8]

इस प्रकार ज्योतिषशास्त्र प्रसिद्ध ग्रहमैत्रीसिद्धान्त को लेकर शिशुपाल पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार व इस जन्म के कर्मों के अनुसार ही वह भगवान का शत्रु बन गया। जिस कारण भगवान श्रीकृष्ण को शिशुपाल का वध करना पड़ा। यहाँ पर महाकवि द्वारा भगवान श्रीकृष्ण के मातृस्वसा के पुत्र शिशुपाल के लिए माघने ज्योतिषशास्त्र प्रतिपादित ग्रहमैत्रीसिद्धान्त को विशिष्टयुक्तियों द्वारा प्रकाशित किया। इसके साथ ही कवि ने शीघ्र व सरलतापूर्वक कार्य सम्पन्न करने हेतु मृदु, मैत्र, क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों का आश्रय लिया है। ज्योतिषशास्त्रानुसार पुष्य नक्षत्रको 'सर्वसिद्धिकर' एवं सर्वदिशा की यात्रामें शुभ माना है।-"**सर्वसिद्धिकरः पुष्यः**"[9] ज्योतिषशास्त्र में प्रतिपादित इस विषय की चर्चा को महाकवि माघ ने निम्न रूप में प्रस्तुत किया है।-

रराज सम्पादकमिष्टसिद्धेः सर्वासु दिक्ष्वप्रतिषिद्धमार्गम्।

महारथः पुष्यरथं रथाङ्गी क्षिप्रं क्षपानाथ इवाधिरूढः॥[10]

सन्दर्भ गत् टीका करते हुए मल्लिनाथ का कथन इस प्रकार है।

पुष्यो हस्तो मैत्रमथाश्विनश्च चत्वार्याहुः सर्वदिग्द्वारकाणि[11]

मुहूर्तचिन्तामणिकार ने क्षिप्रादिक नक्षत्र विवेचन को इस प्रकार प्रस्तुत किया है।-

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा।

तस्मिन् पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम्॥[12]

वशिष्ठ मतानुसार इस प्रकार कहा गया है।-

कथितान्यपि लघुवृन्दे चरसंज्ञे तानि कार्याणि[13]

इस प्रकार शुभ मुहूर्त में किया गया यात्रा प्रस्थान यात्रा में विघ्न नहीं आने देता तथा अभीष्ट कार्य की सिद्धि करता है। इसी ज्योतिषशास्त्रीय सिद्धान्त का आश्रय लेकर महाकवि माघने पुष्य नक्षत्र में सुदर्शनचक्रधारी भगवान श्रीकृष्णके रथारोहण का वर्णन किया है।-

[7] सारावली-४/२८-२९

[8] मानसागरी पृ० २४३-२-३

[9] बृहज्ज्योतिषसार-पृ०१८५

[10] शिशुपालवध ३/२२

[11] शिशु०मल्लिनाथ टीका-३/२२

[12] मुहूर्तचिन्तामणि-नक्षत्रप्रकरण-श्लो०-६

[13] मुहूर्तचिन्तामणि पृ०७४

प्रस्तुत पद्य में भगवान श्रीकृष्ण की वक्रभृकुटि को महाकवि ने धूमकेतु के रूप में प्रस्तुत किया है। शकुनशास्त्रानुसार धूमकेतु का उदय'' उपप्लव उत्पन्न करने वाला माना है। इसी प्रकार भद्रबाहुसंहिता नामक ग्रन्थ में भी धूमकेतु के उदय प्रभाव की चर्चा की है।-

बृहस्पतिं यदा हन्याद् धूमकेतुरथार्चिभिः।

वेदविद्याविदो वृद्धान् नृपांस्तज्ज्ञांश्च हिंसति॥''

शुभ शकुनों का वर्णन करते हुए कहीं प्रशस्त स्वर (श्रीकृष्ण, बलराम, उद्धव की वाणी) का भी परिचय सुधी पाठकों को कराया है, कहीं शुभ वर्ण की वस्तु, कहीं कमल पुष्पों की चर्चा करने से यात्रावर्णन प्रसंग पाठकों के लिये रुचिकर बन गया है। साथ ही यात्राकाल में सौभाग्यवती नायिकाओं का दर्शन यात्रा को अमंगल रहित बना दे रहा है। जैसे-

प्राणच्छिदां दैत्यपतेर्नखानामुपेयुषां भूषणतां क्षतेन।

प्रकाशकार्कश्यगुणौ दधानाः स्तनौ तरुण्यः परिवव्रुरेनम्॥

आकर्षतेवोर्ध्वमतिकृशीयानत्युन्नतत्वात्कुचमण्डलेन।

ननाम मध्योऽतिगुरुत्वभाजा नितान्तमाक्रान्त इवांगनानाम्॥

यां यां प्रियः प्रैक्षत कातराक्षी सा सा ह्रिया नम्रमुखी बभूव।

निःशंकमन्याः सममाहितेर्ष्यास्तत्रान्तरे जघ्नुरमुं कटाक्षैः॥''

प्रस्तुत पद्य में शकुनशास्त्रीय सिद्धान्तों का अनुसरण करते हुए महाकवि माघने श्रीकृष्ण की हस्तिनापुर यात्रा प्रस्थान में सौभाग्यवती देवीयों की उपस्थिति शुभसूचक बताई है।

पुनः शुभ शकुनों का वर्णन करते हुए पूर्ण चन्द्र का दर्शन, मधुर संगीत श्रवण, स्तुति गान, मृदंगध्वनि ये सभी यात्रा को रमणीय बना रहे हैं। जैसे-

पिपासतस्तस्य महीध्ररन्ध्रभिदापटीयान्पटहप्रणादः।

जलान्तराणीव महार्णवौघः शब्दान्तराण्यन्तरयाञ्चकार॥''

शकुनशास्त्र में नगाड़ों की ध्वनि, मृदंगादिवाद्ययन्त्रों की ध्वनि के श्रवण को शुभफल सूचक रूप में माना है।-

भेरीशंखमृदंगश्च प्रयाणे ये यथोचिताः।

निबध्यन्ते प्रयातानां विस्वरा वाहनाश्च ये॥''

---

[32] मुहूर्त पारिजात,यात्राप्रकरण पृष्ट २९८

[33] भद्रबाहुसंहिता२१/२१

[34] शिशुपालवध ३।१४,१५,१६

[35] शिशुपालवध ३/२४

साथ ही वन विहार जलक्रीडा, मयूर दर्शन, मयूर स्वर, द्विज दर्शन, साधु पुरुष, दर्शनादि के द्वारा यात्रा को सुगम बना दिया है। जैसे-

द्रुतमध्वनुपरि पाणिवृत्तयः पणवा इवाश्वचरणक्षता भुवः।

ननृतुश्च वारिधरधीरवारणध्वनिहृष्टकूजितकलाः कलापिनः॥''

प्रस्तुत पद्य में शकुनशास्त्र का अनुकरण करते हुए महाकवि ने मयूरादि द्वारा किये गये मधुर शब्द को यात्रा में शुभ फल सूचक माना है। बृहत्संहिता में मयूरादि के द्वारा किये गये मधुर ध्वनि को निम्नलिखित रूप में प्रकाशित किया है।-

कुक्कुटेभपिरिल्यश्च शिखिवञ्जुलछिक्कराः।

बलिनः सिंहनादश्च कूटपूरी च पर्वतः॥''

साथ ही प्रतिपक्षी राजाओं के शरीर का वस्त्र गिरना, '' राजकन्याओं के हाथ से कास्य पात्र पतन'' तथा शत्रु युवतियों के नेत्रों से प्रवाहित होती अश्रुधार'' शत्रु राजाओं के लिये विनाश अपशकुन रूप में वर्णित है।

इस प्रकार शिशुपालवधमहाकाव्य का अवलोकन करते हुए काव्य में ज्योतिषशास्त्र संबद्ध, सूर्यादि ग्रहों की स्थिति, सूर्यग्रहण व विभिन्न ग्रह नक्षत्रों द्वारा निर्मित योगों का विचार विशद् रूप से चर्चित है। साथ ही विभिन्न प्रसंगों में अन्य ज्योतिषशास्त्रीय तत्वों का वर्णन कर महाकवि माघ ने अपनी प्रतिभा से कुशल ज्योतिषशास्त्रज्ञता का परिचय दिया है।

---

[36] भद्रबाहुसंहिता १३/१११

[37] शिशुपालवध १३/५

[38] बृहत्संहिता-शकुनअध्याय श्लोक २०

[39] शिशुपालवध १५/५७

[40] शिशुपालवध १५/८१

[41] शिशुपालवध १५/८१, १५८४